ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 152-156

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

वर्तमान सार्वजनिक पुस्तकालय : उपयोगिता, महत्व, समस्यायें एवं समाधान

"एक अध्ययन"

उमेश चन्द्र

शोध अध्येता– (वरिष्ठ सहायक पुस्तकालयाध्य) महात्मा गाधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट– सतना मध्य प्रदेश, भारत

Received- 03.05.2020, Revised- 07.05.2020, Accepted - 11.05.2020 E-mail: rajpoot.mgcgv@gmail.com

सारांश : ***हर युग में पुस्तकालय का अर्थ बदलता रहा है और पुस्तकालय के कार्य क्षेत्र का विस्तार होता रहा है, लेकिन यह मान्यता लक्ष्मण रेखा के जैसे सत्य है कि पुस्तकालय ज्ञान सामग्री के भण्डारण का स्थान है, पर आज के पुस्तकालय पुस्तकों के साथ– साथ ज्ञान के नवीन उपकरणों के संग्रहण में भी सक्षम हैं। ज्ञान सामग्री को रखने का कार्य तो अन्यत्र भी हो सकता है, लेकिन पुस्तकालय उक्त ज्ञान सामग्री को संग्रहीत कर मनुष्यों के व्यापक उपयोगार्थ प्रस्तुत करता है । ज्ञान या सूचना के संचयन और प्रकीर्णन में पुस्तकालयों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, पुस्तकालय और समाज एक दूसरे के सहयोगी होते है, बिना पुस्तकालयों के यदि समाज का महत्व नही है, तो बिना समाज के पुस्तकालयों का जन्म संभव नही है।***

समाज मे पुस्तकालय के प्रादुर्भाव ने ज्ञान को निजी क्षेत्र से निकाल कर सामान्य जनमानस का कण्ठाहार बनाया है, मुद्रण के आविष्कार ने पुस्तकालय के इस उपयोगी स्वरूप को व्यापकता प्रदान की है इसलिए आज पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था के रूप में स्थापित है।

कुंजीभूत शब्द– मान्यता, लक्ष्मण रेखा, ज्ञान सामग्री, संग्रहीत, प्रकीर्णन, प्रादुर्भाव, कण्ठाहार, व्यापकता, प्रस्तुत

सार्वजनिक पुस्तकालय–सार्वजनिक पुस्तकालयों में वे सारे पुस्तकालय आते है जो जनता के लिए जनता द्वारा और जनता से ही चलाये जाते हैं, ऐसे पुस्तकालयों का सारा व्यवस्थापन सार्वजनिक कोष से होता है और इनका उपयोग समाज के किसी भी वर्ग का कोई भी व्यक्ति कर सकता है, ऐसे पुस्तकालयों के माध्यम से आम और विशिष्ट सभी लोगों को अध्ययन और अनुसंधान के अपेक्षित अवसर प्राप्त होते है। कार्लाइल महोदय ने तो सार्वजनिक पुस्तकालयों को आम आदमी का विश्वविद्यालय की संज्ञा प्रदान की है, परन्तु सार्वजनिक पुस्तकालय मात्र आम आदमी के विश्वविधालय ही नही वरन समाज के अभिभावक और सतर्क संरक्षक भी होते है। सार्वजनिक पुस्तकालय हमारे समाज की जरूरत है क्योकि मात्र सार्वजनिक पुस्तकालय ही ऐसे स्थल होते है जो बिना किसी भेदभाव के समाज के हर वर्ग की ज्ञान पिपासा को शान्त करते है। पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉव रंगनाथन ने सार्वजनिक पुस्तकालयों को इस प्रकार परिभाषित किया है– "सार्वजनिक पुस्तकालय वे होते है जो समाज के द्वारा समाज के लिए ही स्थापित किये जाते है तथा समाज के प्रत्येक नागरिक को जीवन पर्यन्त स्वयं शिक्षा प्राप्त करने का अनुकूल अवसर प्रदान करते है"[1]।

सार्वजनिक पुस्तकालयों के उद्देश्य– सार्वजनिक पुस्तकालयों का मुख्य उद्देश्य सभी पाठकों को उनकी आवश्यकता एवं अभिरुचि के अनुसार पाठ्य सामग्रियों से लाभान्वित करने के लिए ग्रन्थालय सेवा प्रदान करना है। सार्वजनिक पुस्तकालयों का उद्देश्य न केवल वर्तमान पाठकों की आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति करना है अपितु अधिक से अधिक संख्या में हर वर्ग के व्यक्तियों को पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना होता है। डॉव रंगनाथन ने अपनी पुस्तक 'लाइब्रेरी मैनुअल' में सार्वजनिक पुस्तकालयों को सामाजिक संस्थाओं की संज्ञा दी है क्योकि ये समाज के लिए ही खोले जाते हैं तथा इनका प्रमुख उद्देश्य समाज के शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन में विकास करना होता है। सार्वजनिक पुस्तकालय के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं–

प्रत्येक नागरिक को जीवनपर्यन्त स्वयं शिक्षा उपलब्ध कराना। प्रत्येक विषय से सम्बन्धित अधतन् सूचना सामग्री का संकलन। पाठकों की माँग को पूरा करना।पुस्तकालय के संवर्धन एवं संग्रहण के साथ– साथ नवीन पाठकों को पुस्तकालयों से जोड़ना।पाठकों के हितार्थ अन्य सुविधाओं की व्यवस्था करना इस प्रकार सार्वजनिक पुस्तकालयों को अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए कार्य करना चाहिए क्योकि सार्वजनिक पुस्तकालय समाज के सर्वांगीड़ विकास के लिए खोले जाते हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालयों की भूमिका– सार्वजनिक पुस्तकालय समाज के हर नागरिक के हितार्थ शैक्षणिक, सांस्कृतिक, तथा सूचनात्मक संस्थाओं के रूप में विशिष्ट भूमिका निभाते हैं, ये समाज के बौद्धिक ऊर्जा स्रोत (Intellectual power house) के रूप में शिक्षा एवं सूचना

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

उपलब्ध कराते हैं। यूनेस्को ने अपने घोषणा पत्र में कहा है कि सार्वजनिक पुस्तकालयों का कार्य समाज के प्रत्येक नागरिक को ऐसा अवसर उपलब्ध कराना है जिससे वे अपने समय के मूल्य को पहचान सकें, उन्हे अनवरत् रूप से स्वयं शिक्षा के लिए प्रेरित कर सकें , आधुनिक समय के विज्ञान, तकनीकी और कला की प्रगति से अवगत करा सकें तथा ज्ञान एवं सूचना सामग्री को आकर्षक ढंग से व्यवस्थित कर उसे जन साधारण को उपलब्ध करा सकें। इस प्रकार सार्वजनिक पुसतकालयों की भूमिका एवं उपयोगिता निम्नवत् है–

1. समाज के प्रत्येक जन साधारण को अनौपचारिक शिक्षा उपलब्ध कराना।
2. औपचारिक शिक्षा हेतु पाठकों के इच्छित विषयों का श्रेष्ठ संकलन ।
3. प्रत्येक पाठक की आवश्यकताओं एवं अभिरुचियों की प्रतिपूर्ति करना।
4. समाज के व्यक्तियों के खाली समय में उत्तम मनोरंजन एवं रचनात्मक कार्यो को बढावा देना।

जैसा कि हम जानते हैं कि सार्वजनिक पुस्तकालय सामाजिक संस्था होते है जो निरन्तर समाज कल्याण में रत रहते हुए विज्ञ और अविज्ञ को समान रुप से ज्ञान प्रसारित करते हैं। पुस्तकालय वास्तव में ज्ञान के भण्ड़ार होते है इसलिए इनको लोक विश्वविधालय की संज्ञा दी गई है जिसके द्वार समाज के हर वर्ग के व्यक्ति के लिए खुले होते है, कोई भी व्यक्ति किसी विधालय से जीवन पर्यन्त शिक्षा एवं ज्ञान प्राप्त नही कर सकता, किन्तु सार्वजनिक पुस्तकालय का सदस्य बन कर कोई भी आजीवन अपने ज्ञान का संवर्धन कर सकता है। इसके अतिरिक्त अवकाश के समय में समय के सदुपयोग एवं स्वस्थय मनोरंजन के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों से बेहतर कोई विकल्प ही नही है।

सार्वजनिक पुस्तकालय अपने अधतन् सूचना साहित्य से पाठकों को उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरुक करने का भी काम करते हैं। सार्वजनिक पुस्तकालय में संग्रहीत ज्ञान एवं सूचना सामग्री से कोई भी व्यक्ति अपने कार्य में दक्षता प्राप्त कर अपनी उन्नति के साथ– साथ राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान दे सकता है। सार्वजनिक पुस्तकालय जन साधारण में राष्ट्रीय एकता अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति, सहयोग, एवं सद्भावना में बृद्धि के कारक होते हैं। इस प्रकार सार्वजनिक पुस्तकालय मानव एवं मानवता के साहित्यिक, सांस्कृतिक विरासत को सदैव संरक्षित एवं सुरक्षित रखते हैं, एसलिए ये समाज के विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों की शैक्षणिक, व सांस्कृतिक आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति के लिए आवश्यक भूमिका निभाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक पुस्तकालय हमारे समाज में कितना महत्वपूर्ण स्थान रखते है, लेकिन वर्तमान युग प्रौधोगिकी (technological era) युग के नाम से जाना जाता है आधुनिक टेक्नोलॉजी की चकाचौंध में सार्वजनिक पुस्तकालयों का आस्तित्व मिटता सा जा रहा है , वर्तमान समय में ये सामाजिक संस्थाएँ वीरान होती जा रही हैं इसके अनेक कारण हैं जिसमें कुछ निम्नवत् हैं–

1. पुस्तकालयों के प्रति सरकारों की उदासीनता सार्वजनिक पुस्तकालय पूरी तरह से सरकारी होते है, जिनका सारा खर्च सरकार उठाती है, फिर भी पुस्तकालयों को समृद्ध करने के विषय में कोई भी सरकार कभी बात नही करती। पुस्तकालय हमारे सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करने का काम करते है परन्तु पुस्तकालयों के उचित रख–रखाव, परिमार्जन एवं विकास के लिए सरकारों द्वारा सही कदम नही उठाये जाते हैं।
2. पठन दृपाठन में घटती रुचि वक्त के आभाव व आधुनिक जीवनशैली की चकाचौंध में जहाँ लोग पठन–पाठन की संस्कृति को भूलते जा रहे, वही मोबाइल, कम्प्यूटर व अन्य इलेक्ट्रानिक गैजेट की वजह से लोग पढ़ने की परम्परा से दूर होते जा रहे है, आज इन इलेक्ट्रानिक डिवाइस की मदद से एक क्लिक में पाठक अपनी आवश्यकता की प्रतिपूर्ति घर बैठे ही कर लेते है।
3. पुस्तकालयों का समय के साथ अपडेट न होना बहुत कम सार्वजनिक पुस्तकालय है जो समयानुसार अपने को अपडेट रखते है, अधिकतम् पुस्तकालयों मे चाहे पाठ्य सामग्री हो या पुस्तकालय सेवाएं अपडेट नही है जिसकी वजह से भी सार्वजनिक पुस्तकालयों के प्रति पाठको का आकर्षण कम होता जा रहा है।
4. अनुपयोगी पटन सामग्री की भरमार ज्यादातर सार्वजनिक पुस्तकालयों में ऐसी पाठ्य सामग्री की भरमार है जो किसी भी तरह के पाठको द्वारा प्रयोग नही किया जाता, ऐसी पाठ्य सामग्री केवल पुस्तकालयों में स्थान घेरने का ही काम करती हैं।
5. पाठकों की माँग को पूरा न कर पाना सार्वजनिक पुस्तकालयों का उत्तरदायित्व होता है कि वो अपने पाठको की आवश्कताओं को पूरा करे, उनकी ज्ञान पिपासा को शान्त करें पर पुस्तकालय में आने वाले हर आयु, वर्ग, घर्म, के पाठकों की माँग को पूरा करने में उन्हें पूर्ण रूप से संतृप्त करने में सार्वजनिक पुस्तकालय अक्षम होते है।
6. आर्थिक सीमाएँ पुस्तकालयों को प्रदान किए जाने वाला बजट बहुत कम होता है जिसकी वजह से पुस्तकालय सही

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

तरीके से पुस्तकालयीन क्रिया–कलापों को सम्पादित एवं संचालित नही कर पाते है।

7. पुस्तकाय सदस्यों/पाठकों की प्राथमिक आवश्कताओं की प्रतिपूर्ति न होना अधिकतम् सार्वजनिक पुस्तकालयों में सदस्यों की प्राथमिक आवश्कताएँ जैसे –साफ पानी, शौचालय, आरामदायक फर्नीचर, बिजली आदि सुलभ नही हो पाती इसलिए पाठकों को परेशानियों का समना करना पड़ता है।

8. पुस्तकालय कर्मियों का बेरुखा व्यवहार सार्वजनिक पुस्तकालयों के कर्मचारियों का बेरुखा व्यवहार एवं कार्यों के प्रति रुचि का आभाव भी पाठको को पुस्तकालयों से दूर करता है।

9. अध्ययन हेतु उपयुक्त वातावरण का आभाव यदि सार्वजनिक पुस्तकालयों का वातावरण उपयुक्त नही होगा अथवा पुस्तकालय में साफ–सफाई का आभाव होगा ऐसी अवस्था में भी पुस्तकालयों के प्रति पाठकों में आकर्षण उत्तपन्न नही हो सकता है।

10. पुस्तकालयों का अव्यवस्थित होना सार्वजनिक पुस्तकालय एक वृहद संस्था होती है जिसमें अनेक कक्ष होते है, एवं हर प्रकार की पाठ्य सामग्री उपलब्ध होती है चाहे ग्रन्थ, पुराण हों या शोध सम्बन्धी पुस्तकें या सामान्य पुस्तकें, अथवा पत्र– पत्रिकाएं इन सभी का उचित व्यवस्थापन , वर्गीकरण, सूचीकरण एवं फलक व्यवस्थापन तथा संग्रहण सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए एक जटिल कार्य होता है, और यदि सार्वजनिक पुस्तकालय पूर्ण रूप से व्यवस्थित नही है तो हम समय पर पाठकों को सन्तुष्ठ नही कर पायेगें। और इस प्रकार पाठक स्वतः ही पुस्तकालय से दूर हो जायेगें । उपर्युक्त के अतिरिक्त अनेकानेक ऐसे कारण हैं जिसकी वजह से सार्वजनिक पुस्तकालयों की उपयोगिता या यूँ कहें कि सार्वजनिक पुस्तकालयों के प्रति लोगों का रुझान कम हो रहा है, परन्तु सार्वजनिक पुस्तकालयों का महत्व समाज में कभी भी कम नही हो सकता क्योकि मात्र सार्वजनिक पुस्तकालय ही ऐसे स्थल हैं जहाँ बिना किसी भेदभाव के समाज के हर वर्ग को दुर्लभ से दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण ज्ञान सामग्री प्राप्त होती है।

सार्वजनिक पुस्तकालयों को उपयोगी एवं महत्वपूर्ण रखने के उपाय– सार्वजनिक पुस्तकालयों के प्रति घटते आकर्षण को खत्म करने के लिए और सार्वजनिक पुस्तकालयों को महत्वपूर्ण इकाई के रूप में स्थापित करने के लिए कुछ ऐसे कदम उठाने की आवश्यकता है जिससे सार्वजनिक पुस्तकालय सभी के लिए प्राथमिक आवश्यकता बन जायें जैसे कि–

पुस्तक या पाठ्य सामग्री का चयन– पुस्तकालयों की आत्मा उसमें विधमान उपयोगी, रोचक और श्रेष्ठ पुस्तकों में वसती है। सार्वजनिक पुस्तकालयों की सम्पूर्ण पुस्तकें उपयोगिता की दृष्टि से एक जैसी नही हो सकती हैं, अच्छी पुस्तकें व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के लिए उपयोगिता से सम्पन्न होती हैं इसलिए पुस्तकों को एक अच्छे मित्र के रूप में देखा जाता है जिनके साहचर्य से हम अपने चहुँमुखी विकास हेतु चिन्तन एवं प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन सूचना विस्फोट एवं प्रिन्टिगं टेक्नोलॉजी में नित नवीन आविष्कारों के कारण संसार की समस्त भाषाओं में इतनी बड़ी संख्या में अच्छी और बुरी, उपयोगी और अनुपयोगी, रोचक और अरोचक, संग्रहणीय और त्याज्य सभी कोटियों की पुस्तकें या पाठ्य सामग्री लगातार प्रकाशित हो रहीं हैं और किसी भी पुस्तकालय के लिए उन सब का संग्रहण ना तो सम्भव है ना ही आवश्यक अतः पुस्तकालयाध्यक्ष को अपने पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की अभिरुचि व आवश्यकता के अनुरूप आवश्यक पाठ्य सामग्री का चयन करना चाहिए।

पुस्तकालय सदस्यों/पाठकों की सन्तुष्ठी–प्रत्येक पुस्तकलय का दायित्व होता है कि वे अपने पाठकों की आवश्यकताओं का ध्यान रखे व उन्हे पूर्णतः सन्तुष्ट करे। सभी पाठकों को उनकी वांछित सूचना कम से कम समय में उपलब्ध कराने का प्रयत्न करना चाहिए क्योकि वर्तमान युग सूचना प्रौधोगिकी का युग है जिसके कारण हम पाठकों को पुस्तकालयों की ओर आकर्षित करते है और यदि ऐसे में सार्वजनिक पुस्तकालय अपने पाठकों को सन्तुष्ट नही कर पायेंगे तो पाठक दूसरा रास्ता खोज लेगें जिससे सार्वजनिक पुस्तकालयों की महत्ता कम हो जायेगी और वे अपने को जीवन्त नही रख पायेगें अतः सार्वजनिक पुसतकालयों को पाठकों की सन्तुष्टी की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए।

पुस्तकालय में दक्ष कर्मचारियों की नियुक्ती हो–

महादेवी वर्मा के कथनानुसार–"मै मानती हूँ कि किसी राष्ट्र के हीरे– मोती, व इसके जो कोष है, उसके जो अध्यक्ष होते है,उससे वह अध्यक्ष बड़ा है,जो उसके चिन्तन विचार का अध्यक्ष होता है, अर्थात पुस्तकालय का अध्यक्ष होता है, क्योकि सोना चाँदी आदि रत्न तो निर्जीव है, लेकिन चिन्तन विचार निर्जीव नही होते– पुस्तकें अमर हैं, लिखने वाले पार्थिव रूप से हमारे बीच नही रहते लेकिन अपने विचार चिन्तन के रूप में निरन्त र हमारे बीच में रहते है। तो जो पुस्तकालय अध्यक्ष होता है वह वास्तव में अमरों के बीच रहने वाला व्यक्ति होता है और यदि वह अपने इस कर्तव्य को समझे तो बड़ा कृती है[2]"।

महादेवी वर्मा जी ने इस कथन के द्वारा पुस्तकालयाध्यक्ष

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

की महत्ता उद्‌बोधित की है , पुस्तकालयों में पुस्तकालयाध्यक्ष का होना और दक्ष पुस्तकालय अध्यक्ष का होना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि परिवार या समाज में उसके मुखिया का होना आवश्यक है, परन्तु आज बिड़म्बना यह है कि ज्यादात ंसार्वजनिक पुस्तकालयों में या तो पुस्तकालयाध्यक्ष ही नही होते और यदि होते भी है तो वे अपने कार्यों में कुशल या दक्ष नही होते, समाज में सार्वजनिक पुस्तकालयों को आस्तित्व को बचाये रखने के लिए दक्ष कर्मचारियों का होना अति आवश्यक है।

सार्वजनिक पुस्तकालयों को बहुकृत्यक और बहुउद्देश्यीय होना चाहिए– वर्तमान समय मार्केटिंग का है जो दिखता है वही बिकता है वाला, इस परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालयों को अपना परम्परागत रूप छोड़ कर (जिसमें पुस्तकालय मात्र संग्रहण स्थल की भूमिका निभाते है) नवीनतम् स्वरूप में होने चाहिए जहाँ पाठक को एक ही जगह पर अध्यन– अध्यापन के साथ–साथ मनोरजंन, खेलकूद, चाय दृनाश्ते आदि के भी संसाधन उपलब्ध होने चाहिए ताकि अधिकतम् लोग पुस्तकालयों के प्रति आकर्षित हों इसके साथ ही पुस्तकालयों में पाठकों का प्रवेश निःशुल्क होना चाहिए तथा सदस्यता शुल्क भी बहुत अधिक नही होना चाहिए।

पुस्तकालय सेवाओं का विस्तार– सार्वजनिक पुस्तकालयों में पाठकों की संख्या में वृद्धि करने के लिए पुस्तकालय को मात्र आगम दृनिर्गम तक ही सीमित नही रहना चाहिए , बल्कि अनेक तरह की पुस्तकालयी सेवाओं का संचालन करना चाहिए जैसे कि–

1. नवीन पाठकों का अभिमुखीकरण (orientation of fresh-man)
2. पुस्तक सूचीकरण एवं वर्गीकरण (book cataloguing and classification)
3. सन्दर्भ सेवाओं (Reference services) का संचालन जैसे कि–

i. अन्तर ग्रन्थालय आदान– प्रदान (Inter library loan)
ii. पाठक परामर्श सेवा (Reader advisory services)
iii. अनुक्रमणिकाकरण एवं सारांशकरण सेवाएँ (IndeÛing and Abstracting)
iv. रेफ़रल सेवाएँ (Referral Services) इत्यादि ।

इसके अलावा समय –समय पर पुस्तक एवं सामायिक पत्र पत्रिकाओं की प्रदर्शनी आयोजित करना चाहिए साथ ही पुस्तकालय में इण्टरनेट, प्रिन्टआउट निकालने, फोटोस्टेट आदि की सुविधा होनी चाहिए। इसके साथ ही पुस्तकालय की नवीन कृतियों का प्रदर्शन, मोबाइल लाइब्रेरी आदि सेवाओ का संचालन कर के सार्वजनिक पुस्तकालयों में नई जान ड़ाली जा सकती है।

पाठकों तक पहुँच बनाना– पुस्तकालयों तक यदि पाठकों की पहुँच संभव ना हो तो पुस्तकालयों को पाठकों तक पहुँच बनाना चाहिए अर्थात सार्वजनिक पुस्तकालयों को ऐसी सेवाएँ शुरु करनी चाहिए या ऐसी सुविधा प्रदान करना चाहिए कि यदि पाठक पुस्तकालय आने में असमर्थ है तो पुस्तकालय स्वंय उसके पास जा कर , पुस्तकालय से जोड़ कर उसे लाभान्वित कर सके । चल पुस्तकालय जैसी सेवाओं से ऐसे काम बड़ी निपुणता के साथ किए जा सकते है। सार्वजनिक पुस्तकालयों को आवश्यकता है ऐसी सेवाएँ अपने पाठकों को उपलब्ध कराने की।

अधतन् सूचना सामग्री– सार्वजनिक पुस्तकालय समाज के हर व्यक्ति के उपयोगार्थ होते हैं परन्तु ज्यादातर सार्वजनिक पुस्तकालयों में पाठकों का ऐसा समूह आता है जो युवा वर्ग का होता है और जो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी या फिर रिसर्च अनुसंधान एवं अन्य अध्ययन दृअध यापन में लगे होते है, उन्हे आवश्यकता होती है अधतन् सूचना सामग्री की और यदि अधतन् सूचना समय पर उपलब्ध नही होती तो ऐसे पाठक अपनी आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति सार्वजनिक पुस्तकालयों की बजाय कही और से करते हैं । अतः सार्वजविक पुस्तकालयों में अधतन् सूचना सामग्री होनी चाहिए ताकि किसी पाठक को सार्वजनिक पुस्तकालय से असंतुष्ट होकर ना जाना पड़े।

उपयोगकर्ता के अनुकूल वातावरण– सार्वजनिक पुस्तकालय का माहौल उपयोगकर्ता के अनुकूल होना चाहिए , अर्थात पुस्तकालय में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सम्पूर्ण पुस्तकालय से परिचित कराना तथा उसको ऐसा वातावरण देना कि वह असहज न महसूस करे और खुल कर अपनी अभिरुचि एवं आवश्यकता प्रकट कर सके ।

नवीनतम् टेक्नोलॉजी– सार्वजनिक पुस्तकालयों की आवश्यकता एवं उपयोग को बढ़ाने के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों में नवीनतम् टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देना चाहिए और उपयोग करना चाहिए। सार्वजनिक पुस्तकालयों के प्रचार प्रसार से लेकर उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सारी सेवाएँ परम्परागत स्वरूप के साथ दृसाथ डिजिटल स्वरूप में भी होनी चाहिए, पुस्तकालय में स्वचालन, ऑनलाइन कैटलॉग, आदान– प्रदान में कम्प्यूटर का उपयोग आदि से सार्वजनिक पुस्तकालयों के कार्यों को कम संसाधन में भी बेहत तरीके से सम्पन्न किए जा सकते है।

संवर्गीय संगोष्ठियाँ एवं अन्य आयोजन– आज का युग विशिष्टता का युग है, हर क्षेत्र में नित नये दृनये खोज एवं अनुसंधान हो रहे है, साथ ही टेक्नोलॉजी का

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

उपयोग भी दिनोंदिन अपनी पकड़ मजबूत करता जा रहा है, सार्वजनिक पुस्तकालय भी इस विशिष्टता एवं टेक्नोलाजी से अछूते नही हैं इनका स्वरूप भी पूर्णतः बदल रहा है, पुस्तकालय के स्वरूप में परिवर्तन के साथ यह भी आवश्यक हो जाता है कि पुस्तकालय कर्मी भी अपने आप को व्यावसायिक विशिष्टता के योग्य बना लें इसके लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों को समयानुरूप ऐसी संगोष्ठियाँ, सेमिनार, वर्कशॉप आदि का आयोजन करना चाहिए जिससे पुस्तकालय कर्मी अपने आप को अधतन् रख पायें। वहीं पुस्तकालयों से पाठकों को जोड़ने के लिए भी समय दृ समय पर मूल्यपरक एवं उपयोगी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। ऐसे आयोजन के माध्यम से हम अधि ाक से अधिक पाठको कों पुस्तकालयों से जोड़ने एवं उनकी सेवाओं से उन्हे लाभान्वित कर सकते है।

अन्य संस्थाओं से सहयोग एवं सामांजस्य– समाज में सार्वजनिक पुस्तकालयों को बचाये रखने व उन्हे विकशित व समृद्ध करने के लिए अनेक संस्थाए काम कर रही है जैसे कि, नैसकॉम (NASSCOM) बिल एण्ड़ मिलिण्ड़ा गेट्स (Bill and Melinda gates), राजा राम मोहन रॉय लाइब्रेरी फाउण्डेशन (RRRLF), आई. पी एल. एम. (Indian public library movement) इत्यादि। सार्वजनिक पुस्तकालय ऐसी संस्थाओं से सहयोग एवं सामान्जस्य स्थापित करके पुस्तकालयों के संवर्धन में उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

मुक्त प्रवेश प्रणाली– इस प्रणाली में पाठक सीधे पुस्तकों की आलमारियों तक पहुँच कर अपनी पसन्द की पुस्तकें निकाल कर निर्गत करा सकते हैं इसलिए सार्वजनिक पुस्तकालयों में मुक्त द्वार प्रणाली होनी चाहिए। पाठकों द्वारा अपनी वांछित पुस्तक खोजते समय वे अन्य पुस्तकों के सम्पर्क में आयेंगे और इस प्रकार अन्य पुस्तकों के उपयोग में वृद्धि होगी। मुक्त प्रवेश प्रणाली से न केवल पाठकों व कर्मचारियों के समय की बचत होगी वरन् पुस्तकों के अधिकतम् उपयोग में भी बृद्धि होगी।

पर्याप्त पुस्तकालय बजट– किसी भी काम को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए धन की आवश्यकता होती है, इसके आभाव में कोई भी सेवा सम्पादित नही हो सकती, पुस्तकालयों को प्रदान किये जाने वाला बजट या धन बहुत कम होता है, जिसकी वजह से पुस्तकालयीन सेवाएँ का संचालन सही ढ़ग से नही हो पाता है अतः आवश्यक है कि पुस्तकालयो को प्रदान किए जाने वाले ध ान में पर्याप्त वृद्धी की जाये, सरकारी अनुदानों की राशि में वृद्धी होनी चाहिए एवं पुस्तकालय में भी ऐसी सेवाएँ बढ़ाई जायें जिसके द्वारा पुस्तकालयों की भी आय सुनिश्चित हो सके, और उस धन का उपयोग पुस्तकालय के अन्य कार्यो में किया जा सकें।

निष्कर्ष–निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि किसी भी विषय को सीखने समझने के लिए पुस्तकालय उत्प्रेरक का काम करते है। महान देश भक्त लाला लाजपत राय ने पुस्तकों के महत्व के बारे में बताते हुए कहा था कि "मैं पुस्तकों का नरक में भी स्वागत करुगाँ, इनमें वह शक्ति है जो नरक को भी स्वर्ग बनाने की क्षमता रखती है" । सार्वजनिक पुस्तकालय समाज का आइना होते है, वे बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी पक्षपात के सभी आगन्तुकों (पाठकों) को उनके गंतव्य (मंजिल) तक पहुँचाते है। लेकिन टेक्नोलॉजी की चकाचौंध और आधुनिक जीवन शैली में परम्परागत् (जतंकपजपवदंस) पुस्तकालयों का आस्तित्व कही खो स गया है, यधपि कहीं– कहीं सार्वजनिक पुस्तकालय बहुत ही ज्यादा प्रचलित हैं एवं उपयोग किए जाते हैं ,तो कहीं सार्वजनिक पुस्तकालय अपनी रूढिवादिता का बोझ उठा रहे हैं ऐसे में आवश्यकता है हमें ऐसे ठोस कदम उठाने की जिससे सार्वजनिक पुस्तकालय समाज में न केवल अपना महत्व बनाये रख सके, हर एक व्यक्ति के लिए आवश्यक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकें, बल्कि सार्वजनिक पुस्तकालय सभी की प्राथमिक आवश्यकता बन जायें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Dr. S.R. Rangnathan Library manual Asia publishing house 1964.
2. संव भस्कर नाथ तिवारीः प्रौढ शिक्षा और पुस्तकालय, बोहरा पब्लिशर्स , इलाहाबाद, 2011।
3. डॉ0 रामेश्वर नारायण (रमेश): पुस्तक चयन और पुस्तकालय विज्ञान की अन्य दिशाएँ, साहित्य भवन प्रा0 लि0, इलाहाबाद, 1990।
4. डॉ0 एस0 एम0 त्रिपाठी :सन्दर्भ एवं सूचना के नवीन आयाम, वाई0 के0 पब्लिशर्स, आगरा, 2003।
5. B- Pratapa Reddy quality of work life in public libraries commonwealth publishers New Delhi 2010.

*****